विशद

भरतेश्वर स्वामी मण्डल विधान

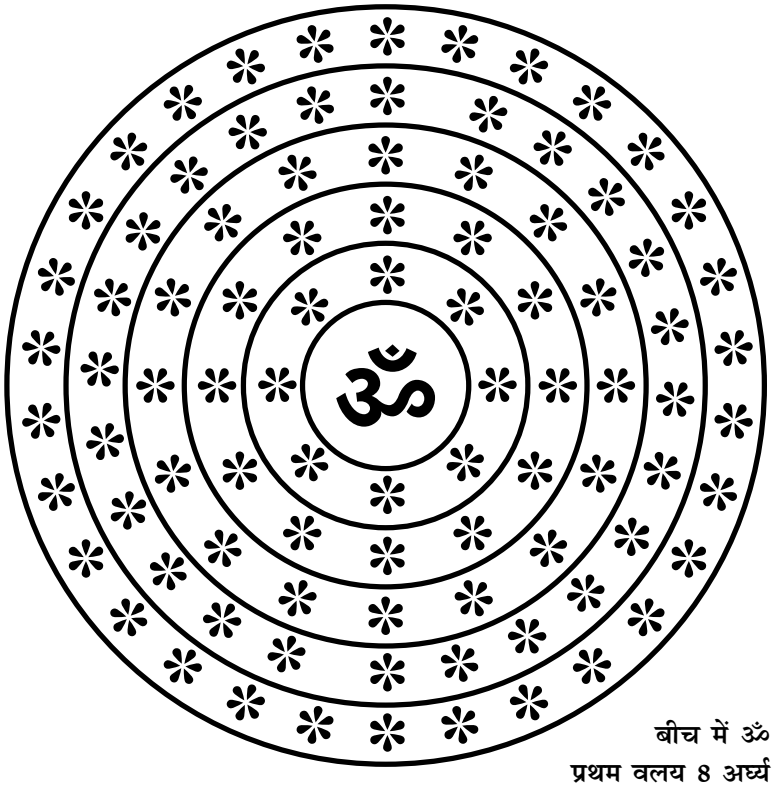

बीच में ॐ
प्रथम वलय 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय 12 अर्घ्य
तृतीय वलय 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय 24 अर्घ्य
पंचम वलय 32 अर्घ्य
कुल 92 अर्घ्य

रचयिता :
प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद श्री भरतेश्वर विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660996425 ब्र. सपना दीदी 9829127533, ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 3. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971 4. श्री. दि. जैन मंदिर रोहिणी सै-3 मो. 9810570747 5. श्री तीस चौबीसी जिनालय बड़ागाँव बागपत (उ.प्र.)
Website	:	www.vishadasagar.com

:: अर्थ सौजन्य ::
श्रीमती विशू जैन धर्मपत्नी श्री नीतेश जैन
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

मूल्य : 21/- रु. मात्र

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

भक्ति से मुक्ति

प्रथम पुत्र तीर्थेश के, हुए प्रथम चक्रेश।
केवल ज्ञान मुहूर्त्त में, पाकर हुए जिनेश॥

भरत चक्रवर्ती श्री ऋषभदेव भगवान के ज्येष्ठ पुत्र थे। बत्तीस हजार राजाओं के स्वामी काल, महाकाल, पाण्डुक, भाणवक, नैसर्प, सर्वरत्न, शंख, पद्म, पिडगल आदि नव निधि एवं अश्व, गज, गृहपति, स्थपति, सेनापति, स्त्री, पुरोहित, छत्र, असि, दण्ड, चक्र काकिणी, चिन्तामणि, चर्म, आदि चौदह रत्नों को धारण करने वाले थे भरतक्षेत्र के छः खण्डों के अधिपति और चक्ररत्न आदि दिव्य गुणों से युक्त थे 96000 रानियाँ उनकी सेवा में समर्पित थी अपार भोग विलास के साधन उपलब्ध होने पर भी राज्य अवस्था में भी वे जल से भिन्न कमल की भाँति रहते थे।

वैराग्य का क्षण जागा। समय पाकर सम्राट भरत ने दीक्षा लेकर अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। भरत चक्रवर्ती के नाम से ही इस देश का नाम भरत देश पड़ा। वर्तमान के सर्वाधिक 200 विधानों के रचयिता आचार्य श्री विशद सागर जी ने प्रस्तुत भरत चक्रवर्ती विधान की रचना कर भक्तों को पुण्याश्रव कने का आलम्बन प्रदान किया है।

यह विधान आप मण्डल की रचना कर या बिना माण्डले की रचना किए थाली में अष्ट द्रव्य से करके अथाह पुण्य का अर्चन कर सकते हैं।

गृह में रहकर रहे विरागी, चक्री जल में कमल समान।
अन्तर्मुहूर्त्त में जिसके फल से, पाए पावन केवल ज्ञान॥
ब्राह्मण वर्ण के संस्थापक है, हुए देश में जो विख्यात।
देते है दृष्टांत विरागी, होने का जग प्राणी भ्रात॥

मुनि विशाल सागर (संघस्थ आ. श्री. विशद सागर जी)
वर्षायोग 2019-हरिद्वार

भरतेश थुदि (स्तवन)

जवह भारतेशं परं वीयरागं, जिनेशं नरेशं च संवेग भावं।
सुहं जेण लद्धं च विराय भावं, जलाम्भोज समदेव चक्रीश नाथं॥
जवह भारतेशं भजह भारतेशं, परम वीयरागी श्री भारतेशं।।टेक॥
नन्दा सुनन्दन, हे आदीश पुत्तो!, बाहुबली भ्रात हे चक्रधारी!।
चरम देह धर हे प्रथम चक्राधीशं, अयोध्या नरेशं हे कारुकारीं॥जवह...2॥
मुत्तिरमा कंत विरायगं तं, विबुद्ध सुद्धं शिवं सौख्य दायं।
अकंप्पिणीयं परमं चरित्रं, आणंद जुत्तो विशुद्ध भावं।।जवह...3॥
अट्ठापदे झाण रयं सुदेवं, चउ-दि्दसासु कित्ती पसद्धिं।
आणंद जुत्तो, तह विश्व वंदम्, सिद्धम् जिणम् चक्रीसं विशुद्धं॥जवह...4॥
महिमा तवं जेण भुत्तं ण किंचि, जलं णेव गहिदं पिया साउरेणं।
विवड्ढो अहेसि सओ गुण समूहो, सयाणं णमामि श्री भारतेशं।।जवह...5॥
सुराखेयरायी खु णिच्चं णमंते, ठिदं झाण मज्झो गिरिंदो-वमाणं।
महा वोह केवल सिरीए महंतं, हवइ मोक्ख भासी खलु एव खिप्पं॥जवह...6॥
सिद्धिं जुदो जस्स महाहिसेगो, आणंद जुत्तो तह विस्स वंदं।
चित्तिं पसीदेइ सुदंसणादो, कम्मारि जेयं तं देव-देवं॥जवह...7।।
भजं भारतेसं सया धम्म रूवं, परम धम्म पत्तं सया सुक्ख रूवं।
'विसद' णाण दंसण बलं सौख्य वानं, जिणं भारतेसं हं मणसा णमामि॥जवह...8॥

श्री आदिनाथ स्तवन

यदंघ्रि पंकेरुह भक्ति भाजां, विसूचिकाद्युग्रुगेति नाशम्।
जिनान् जितारति गणान गुणाप्त्यै, जलादिभिस्तान-मह-मर्चयामि॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

"श्री बाहुबली स्तवन"

अम्बोज नेत्रं हरितोरू गात्रं, दया कलत्रं वर शक्ति पात्रम्।
भव्याब्ज मित्रं भुवने पवित्रं, नाभेय पौत्रं प्रणमामि नित्यं॥
नमस्ते-नमस्ते सुरेन्द्रार्चिताय, नमस्ते-नमस्ते मुनीन्द्र स्तुताय।
नमस्ते-नमस्ते सुनन्दात्म जादा, नमस्ते- नमस्ते हरिद्विग्रहाय॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः।

भरतेश्वर स्वामी पूजन विधान

स्थापना

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, प्रथम तीर्थंकर हुए जिनेश।
भरत चक्रवर्ती जिनके सुत, प्रथम चक्रधर हुए विशेष।
ब्राह्मण वर्ण के संस्थापक हैं, हुए विश्व में जो विख्यात।
भारत देश कहाया जिनके, नाम से होवे सबको ज्ञात॥
दोहा- वैरागी गृह में रहे, पाए केवलज्ञान।
दीक्षा धर जिनका हृदय, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहवाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जन्म जरा मृतु रोग नशाने, कर्म कालिमा को हरते।
रत्नत्रय का पावन जल ले, अन्तर मन निर्मल करते॥
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व स्वाहा।

शीतलता भावों में लाकर, जीवन तरु को महकाए।
क्षमा भाव का चन्दन लेकर, समता हृदय में प्रगटाए॥
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व स्वाहा।

पर का कर्त्ता मान स्वयं को, पर को अपना जान रहे।
पर के क्षय को जान के अपना, आकुलता मय मान रहे॥
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प धरा पर, आभा निज बिखराएँ हैं।
मदन पराजय हो जाए प्रभु, तव अर्चा को आए हैं।।
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व स्वाहा।

क्षुधा तृषा का रोग लगा है, जिससे बहु दुख पाते हैं।
क्षुधा रोग को पूर्ण नशाने, चरु शुभ यहाँ चढ़ाते हैं।।
तीर्थंकर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, नित निज सौभाग्य जगाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व स्वाहा।

मोह तिमिर में भटक रहे हैं, शिव पथ को ना पाया है।
मोह तिमिर को पूर्ण नाशने, दीपक श्रेष्ठ जलाया है।।
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व स्वाहा।

शुभ भावों की धूप सुगंन्धित, निज चेतन को महकाए।
भेद आवरण कर्मों का अब, शिव पद पाने को आए।।
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, निज सौभाग्य जगाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व स्वाहा।

ताजे-ताजे फल रितु-रितु के, फल मम् मन में भाए हैं।
मोक्ष महा फल पाने को अब, फल पूजा को लाए हैं।।
भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, नित निज सौभाग्य जगाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व स्वाहा।

सप्त नयों की तपन सही है, चारों गति भटकाए हैं।
अर्घ्य चढ़ाकर अष्टम वसुधा, पाने प्रभु पद आए हैं।।

भरतेश्वर की चरण धूल जो, अपने माथ लगाते हैं।
शिव पथ के राही वे बनते, नित निज सौभाग्य जगाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

दोहा- तिंहु जग शांती कर विशद, गाए जिन तीर्थेश।
शांती धारा जिन चरण, देते यहाँ विशेष।।

शान्तये शांति धारा

दोहा- पुष्पांजलि करने विशद, सुरभित लाए फूल।
कर्म श्रृंखला जो रही, हो जाए निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

।। अर्घ्यावली।। प्रथम वलयः

दोहा- अष्टकर्म को नाशकर, हुए ज्ञान के नाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजते, झुका चरण में माथ।।

।।अथ प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

।। अष्ट कर्म विनाशक अर्घ्य।।

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
भरतेश्वर कर्म विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्श अनन्त प्रकाशी।।
भरतेश्वर कर्म विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो मोह कर्म विनशाए, वे सुखानन्त को पाए।
भरतेश्वर कर्म के विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो आयु कर्म के नाशी, गुण अवगाहन के वासी।
भरतेश्वर कर्म के विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।4।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यानन्त जगाए।
भरतेश्वर कर्म विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।5।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो नाम कर्म विनशाए, गुण सूक्ष्मत्त्व वे पाए।
भरतेश्वर कर्म विनाशी, जो हुए मोक्ष वासी।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्मरहित भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो गोत्र कर्म विनशाए, वे अगुरुलघु गुण पाए।।
भरतेश्वर कर्म के विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु वेदनीय परिहारी, गुण अव्यावाध के धारी।
भरतेश्वर कर्म के विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।8।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु अष्टकर्म विनशाए, फिर अष्ट सुगुण प्रगटाए।
भरतेश्वर कर्म के विनाशी, जो हुए मोक्षपुर वासी।।9।।

ॐ ह्री अष्टकर्मरहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

।। द्वितिय वलयः।।

दोहा- **द्वादश तप पाए प्रभू, भरतेश्वर जिनराज।**
पुष्पांजलि कर पूजते, शिव पद पाने आज।।

।। अथ द्वितिय वलयोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्।।

द्वादश तप के अर्घ्य

।। चाल छन्द।।

मुनि अनशन तप को पावें, वे अपने कर्म नशावें।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अनशनतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कर ऊनोदर भाई, पावें जग में प्रभुताई।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं उनोदरतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते मुनि रस के त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विविक्त शैय्यासन पावें, तपकर वे कर्म खिपावें।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं विविक्तशैय्याशन तप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि काय क्लेश धर ज्ञानी, तप धारें जग कल्याणी।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशधारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान जो पावें, वे कर्म जयी कहलावें।।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रायश्चित्त तप करते, वे अपने पातक हरते।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चिततप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तप धारी, होते हैं करुणाकारी।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तीतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विनय सुतप को धारें, वे मुक्ती मार्ग सम्हारें।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं विनयतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, मुनि जग के करुणाकारी।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पाते, वे अपने कर्म नशाते।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ध्यान करें अविकारी, मुनिवर जो हैं अनगारी।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी॥12॥

ॐ ह्रीं ध्यानतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर द्वादश तप धारें,वे अपने कर्म निवारें।
भरतेश सुतप के धारी, गाये हैं मंगलकारी॥13॥

ॐ ह्रीं द्वादशतप धारक श्री भरतेश जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलय:

दोहा- अशुभ ध्यान तज के विशद, करें शुद्ध जो ध्यान।
उन जीवों का शीघ्र ही, हो जाता कल्याण॥

॥ अथ तृतीय वलयोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्॥

सोलह ध्यान सम्बन्धी अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

'आर्त्तध्यान' होने लगता है, हो जाये यदि इष्ट वियोग।
जिसके कारण बढ़े जीव को, जन्म जरा मृत्यू का रोग॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥1॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगज आर्तध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो अनिष्ट संयोग जीव के, जागृत होता आर्त्तध्यान।
अनिष्ट संयोग ध्यान हो उसको, रहे न निज आतम का ज्ञान॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥2॥

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रोगादि के कारण कोई, तन में पीड़ा होय महान्।
'पीड़ा चिन्तन' ध्यान होय तब, ऐसा कहते हैं भगवान॥

आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥3॥

ॐ ह्रीं पीड़ा चिंतनआर्तध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आगामी भोगों की वाञ्छा, जग में करता जो इंसान।
तप के फल से चाहे यदि तो, जैनागम में कहा 'निदान'॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥4॥

ॐ ह्रीं निदान बन्ध आर्तध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनके हैं परिणाम क्रूर अति, 'हिंसा में माने आनन्द'।
रौद्र ध्यान का प्रथम भेद यह, कहलाता है हिंसानन्द॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं हिंसानंद रौद्रध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

झूठ बोलकर खुश होता जो, 'मृषानन्द' वह ध्यान रहा।
कर्म बन्ध दुर्गति का कारण, जैनागम में यही कहा॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥6॥

ॐ ह्रीं मृषानंद रौद्रध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मालिक की आज्ञा बिन वस्तु, लेना चोरी रहा सदैव।
चोरी कर आनन्द मनाना, 'चौर्यानन्द' ध्यान है एव॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥7॥

ॐ ह्रीं चौर्यानंद रौद्रध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मूर्छाभाव को कहा परिग्रह, परिग्रह पा खुश हों जो लोग।
'परिग्रहानन्द' ध्यान का उनको, होता है भाई संयोग॥

रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर भरतेश्वर भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥8॥

ॐ ह्रीं परिग्रहानंद रौद्रध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, भाव सहित जग में जो लोग।
चिन्तन में जो लीन रहें नित, 'आज्ञा विचय' ध्यान के योग॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥9॥

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो संसार देह भोगों के, चिन्तन में रहते लवलीन।
वह हैं 'अपाय विचय' के धारी, आत्म ध्यान में रहते लीन॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥10॥

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अपने कृत कारित के फल को, स्वयं भोगते कर्म संयोग।
ऐसा चिन्तन ध्यान करें जो, 'विपाक विचयधारी' वह लोग॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥11॥

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक का क्या स्वरूप है, उसमें जो भी है आकार।
होता है 'संस्थान विचय' से, ध्यान लोक का कई प्रकार॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥12॥

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पृथक द्रव्य गुण पर्यायों का, शब्दों का जो करते ध्यान।
'पृथक्त्व वितर्क' वीचार ध्यान है, ऐसा कहते हैं भगवान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥13॥

ॐ ह्रीं पृथ्कत्ववितर्क वीचार विचय धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रुतज्ञान के अवलम्बन से, चिन्तन करते हैं जो लोग।
एक द्रव्य पर्याय योग का, 'एकत्व वितर्क' ध्यान के योग॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥14॥

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्रिया सूक्ष्म हो जाती तन की, प्रकट होय जब केवल ज्ञान।
निज आतम में होय लीनता, 'सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती' ध्यान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥15॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्रिया योग तन की रुकते ही, होते आतम में लवलीन।
'व्युपरत क्रिया निवृत्ति' ध्यानी, रहते निज चेतन में लीन॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥16॥

ॐ ह्रीं व्युपरितक्रिया निवृत्ति धर्मध्यान निवारक श्रीभरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **अशुभ ध्यान से बंध हो, बढ़े नित्य संसार।**
शुद्ध ध्यान से मोक्ष हो, है आगम का सार॥

ॐ ह्रीं षोडश प्रकार शुभाशुभ ध्यान रहित श्रीभरतेश जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

सोरठा- **भेद कहे चौबीस, परिग्रह के दुखकार ये।**
विशद झुकाते शीश, भरतेश्वर जिन के चरण॥

॥अथ चतुर्थवलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

"चौबिस परिग्रह रहित जिन के अर्घ्य"

(चौपाई)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो हैं मिथ्या के त्यागी, वे शिव पावें बड़भागी॥1॥

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं क्रोध कषाय के धारी, वे दुख पाते हैं भारी।
जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं मान कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वे नर नारी।
जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं माया कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(तांटक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं॥

इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रति' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं।
राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गति पंथ सजाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं रति नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अरति' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे।
बैर भाव के कारण मानव, कर्माश्रव में शीघ्र लगे॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं।
नित कषाय में जलने वाले, कर्म बन्ध ही पाते हैं।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तु, मन में भय उपजाते हैं।
भय के कारण व्याकुल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं भय नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं।
रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं॥

इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।11।।
ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी।
'पुरुष वेद' के धारी हैं वह, व्याकुल रहते हैं भारी।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।12।।
ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करें।
'स्त्री वेद' प्राप्त करके वह, दुर्गति में ही गमन करें।।
इस कषाय के नाशी प्राणी,अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।13।।
ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे।
करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, अर्हत् पदवी पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।14।।
ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द भुजंगप्रयात)

खेती के मन में जो भाव जगाए, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाए।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।15।।
ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।16।।
ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।17।।
ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।18।।
ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वह 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।19।।
ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें, वह 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।20।।
ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सेवा के हेतु जो नौकर बुलावें, वह 'दास परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।21।।
ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें, वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।22।।
ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये कइ लेकर के आवें, वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।23।।
ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वह 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।।24।।
ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- परिग्रह चौबिस का प्रभू, करके पूर्ण विनाश।
शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलय

दोहा- अविरत योग प्रमाद अरु, मिथ्या तथा कषाय।
आश्रव के हैं द्वार यह, बत्तिस कहे जिनाय॥

(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

॥ 32 आश्रव रहित जिन॥

(चौपाई)

तत्त्वों में श्रद्धा ना पावे, वह ही 'मिथ्याज्ञान' कहावे।
प्रभु सम्यक् श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥1॥

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'विपरीत' मार्ग श्रद्धानी, मिथ्यादृष्टी वह अज्ञानी।
प्रभु सम्यक् श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥2॥

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'एकान्त मार्ग' श्रद्धानी, फिरे भटकता जग अज्ञानी।
प्रभु सम्यक् श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥3॥

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'मिथ्यात्व विनय' का धारी, वह अज्ञानी है संसारी।
प्रभु सम्यक् श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥4॥

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संशय मिथ्यावादी' प्राणी, शंका करे निपट अज्ञानी।
प्रभु सम्यक् श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥5॥

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

'हिंसा अविरत' के धारी, होते हैं जीव दुखारी।
जो उत्तम व्रत शुभ पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥6॥

ॐ ह्रीं हिंसाविरति रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'झूठी' है जिनकी वाणी, उनकी दुखमय जिन्दगानी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥7॥

ॐ ह्रीं असत्याविरति रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'चौर्याविरति' के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥8॥

ॐ ह्रीं चौर्याविरति रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो शील व्रतों को खोते, वे 'अब्रह्म' के धारी होते।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥9॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याविरति रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं जीव 'परिग्रह' धारी, दुख पाते हैं नर नारी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥10॥

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

'कषाए अनन्तानुबंधी' से, मिथ्या अविरति पाते हैं।
काल अनन्त भ्रमण करते नर, दु:ख अनेक उठाते हैं॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥11॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कषाय अप्रत्याख्यान' उदय से, अणुव्रत भी न पाते हैं।
अविरति रहकर के कर्मों का, आस्रव करते जाते हैं॥

सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥12॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रत्याख्यान कषायोदय' से, महाव्रती न बन पाते।
महाव्रतों के भाव हृदय में, उन जीवों के ना आते॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥13॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उदय संज्ज्वलन' हो कषाय का, यथाख्यात न हो चारित्र।
कर्मों से मुक्ती न मिलती, भ्रमण करें प्राणी जग मित्र॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥4॥

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्त्री की चर्चा' करने में, रहते हैं जो हरदम लीन।
वह प्रमाद विकथा के धारी, भ्रमण करे जग में हो दीन॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥15॥

ॐ ह्रीं स्त्री विकथा प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चोरी की चर्चा' करके जो, अपना मन बहलाते हैं।
धन की लालच करने वाले, कर्माश्रव बहु पाते हैं॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥16॥

ॐ ह्रीं चोर विकथा प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भोजन की चर्चा' करने में, लीन रहे जो जग के जीव।
भोज्य कथा के रहे प्रमादी, कर्म बन्ध वह करें अतीव॥

सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥17॥

ॐ ह्रीं भोजन विकथा प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'राजनीति राजा की चर्चा', करने में जो सुख पावें।
राज कथा को पाने वाले, प्राणी वह सब कहलावे॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥18॥

ॐ ह्रीं राज विकथा रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाँच इन्द्रियों के विषय

आठ 'विषय स्पर्शन' के हैं भाई रे,
जो प्रमाद के कारण माने भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे॥19॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाँच 'विषय' रसना के जानो भाई रे,
जो प्रमाद के कारण मानो भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे॥20॥

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घ्राणेन्द्रिय के विषय' कहे दो भाई रे,
जो प्रमाद के हेतू हैं दुखदायी रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे॥21॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पंच विषय चक्षू' के पाते भाई रे,
जो प्रमाद करवाते जग को भाई रे।

तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।22।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कर्णेन्द्रिय' के सप्त विषय दुखदायी रे,
जग में भ्रमण कराने वाले भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।23।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो प्रमाद करके निद्रा में, अपना समय गवाते हैं।
वह निद्रा प्रमाद के धारी, दुर्गति पन्थ बनाते हैं।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।24।।

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुत्र मित्र स्त्री आदिक में, जो स्नेह बढ़ाते हैं।
वह 'प्रमाद प्रणय' के धारी, दुःख अनेक उठाते हैं।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।25।।

ॐ ह्रीं प्रणय प्रमाद रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

हैं 'क्रोध कषाय' के धारी, निज गुण घाती दुखकारी।
जो क्रोध कषाय विनाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।26।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह रहे दुखों की खानी।
जो मान कषाए विनाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।27।।

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', वह दुख सहते हैं भारी।
जो यह कषाय भी नाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।28।।

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो जोड़-जोड़ मर जाते, वह 'लोभी' जीव कहाते।
जो लोभ कषाय नशाते, वह शिव पदवी को पाते।।29।।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

।। चाल-छन्द।।

हैं 'मनोयोग' के धारी, आश्रव करते हैं भारी।
मन की चेष्टा के त्यागी, प्राणी होते बड़भागी।।
जो मन को रोकें भाई, उनके फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।30।।

ॐ ह्रीं मनोयोग रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'वचन योग' को पावें, जीवन में कष्ट उठावें।
कर्माश्रव करते भारी, होते वह जीव दुखारी।।
जो वचन को रोकें भाई, उनकी फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।31।।

ॐ ह्रीं वचनयोग रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'काया चंचल' हो जावे तो, आश्रव खूब करावे।
जो नाना रूप बनावे, इस जग में नाच नचावे।।
जो काय को रोकें भाई, उनकी फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।32।।

ॐ ह्रीं काय योग रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- **आश्रव के बत्तिस कहे, यह दुखकारी द्वार।**
रोध करें जो जीव यह, होवें भव से पार।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत आश्रव रहित श्री भरतेश जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- प्रथम चक्रवर्ती हुए,पृथ्वीपति जगपाल।
तीर्थंकर सुत भरत की, गाते हैं जयमाल॥

।।विरागोदय-छन्द।।

आदिनाथ अजनाभ वर्ष के, तृतीय काल में जन्म लिए।
स्वयंबुद्ध हो षट् कर्मों का, इस जग को उपदेश दिए॥
प्रथम पुत्र भरतेश आपके, यशस्वती माँ के नन्दन।
नगर अयोध्या जन्म लिए जो, किया जगत ने अभिनन्दन॥1॥
स्वर्ण समान देह का रंग शुभ, धनुष पांच सौ ऊंचाई।
लाख चुरासी पूर्व की आयू, चक्रवर्ति पदवी पाई॥
सहस सत्तत्तर कुँवर काल था, मण्डलीक था एक हजार।
साठ हजार वर्ष दिग्विजयी, यात्रा कीन्हें अपरम्पार॥2॥
नव निधि चौदह रत्न भी पाए, हुए आप छह खण्ड के नाथ।
बत्तिस सहस्र भूप के स्वामी, रानी सहस्र छियानवे साथ॥
जो अनन्त बल पाए अनुपम, और पाए जो उत्तम भोग।
वज्र वृषभ नाराच संहनन, पाए श्रेष्ठ शरीर निरोग॥3॥
लख चौरासी गज के स्वामी, कोटि अठारह अश्व प्रधान।
जो सप्तांग सैन्य बल पाए, चक्र रत्न धारी गुणवान॥
इत्यादिक सब भोग ना भाए, रहे नीर में कमल समान।
गृह में रहकर रहे विरागी, पाए क्षायक जो श्रद्धान॥4॥
संयम पाए अन्तर्मुहुर्त में, प्रगटाए प्रभु केवलज्ञान।
एक लाख पूरव तक जिनने, किया जगत जन का कल्याण॥
अष्टापद से मुक्ती पाए, सिद्ध शिला पर किए प्रयाण।
'विशद' भाव से भरत केवली, का हम करते हैं गुणगान॥5॥

दोहा- तीर्थंकर के पुत्र हैं, काम देव के भ्रात।
चक्रवर्ति भरतेश जी, हुए जगत विख्यात॥

ॐ ह्रीं श्री भरतेश जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वस्वाहा।

दोहा- अर्चा करते आपकी, विशद भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़े, दो हमको भी साथ॥

।।इत्याशीर्वाद:।।

अन्तर्मुहूर्त में दीक्षा लेते ही केवलज्ञान प्राप्त करने वाले 1008 श्री भरतेश्वर स्वामी का चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन है, नवकोटी के साथ।
चक्रवर्ति भरतेश जी, बने श्री के नाथ॥
चालीसा जिनका विशद, गाते हैं शुभकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ मोक्ष का द्वार॥

(चौपाई)

पुरुषाकार लोक ये जानो, मध्य में मध्य लोक पहिचानो॥1॥
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, जिसके मध्य श्रेष्ठ शुभकारी॥2॥
मध्य सुमेरु जिसके गाया, लख योजन ऊँचा बताया॥3॥
भरत क्षेत्र दक्षिण में जानो, धनुषाकार श्रेष्ठ पहिचानो॥4॥
अवसर्पिणी ये काल बताया, अन्त तीसरे काल का आया॥5॥
है साकेत नगर जगनामी, जन्म लिए आदीश्वर स्वामी॥6॥
धर्म प्रवर्तक जो कहलाए, शिक्षक षट् कर्मों के गाए॥7॥
नन्दा जिनकी थी पटरानी, धर्म परायण सद् श्रद्धानी॥8॥
जिनके पुत्र भरत कहलाए, अन्य भाई सौ जिनके गाए॥9॥
चक्ररत्न को जिनने पाया, छह खण्डों पे राज्य चलाया॥10॥
साठ हज्जार वर्ष तक भाई, दिग्विजयी यात्रा करवाई॥11॥
आर्य खण्ड जिसमें शुभ जानो, पञ्च म्लेच्छ खण्ड भी मानो॥12॥
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया, भारत देश नाम शुभ पाया॥13॥
भरतेश्वर के नाम से भाई, देश का नाम पड़ा सुखदायी॥14॥
वृषभांचल पर नाम लिखाना, भरतेश्वर ने मन में ठाना॥15॥
किन्तु वहाँ जगह ना पाए, तब मन में वैराग्य जगाए॥16॥
गृह में रहकर हुए जो त्यागी, पाके सब कुछ हुए ना रागी॥17॥
त्रय सन्देश साथ में आए, केवलज्ञान पिता जी पाए॥18॥
आयुध शाला में शुभ जानो, चक्ररत्न प्रगटा है मानो॥19॥
प्रथम पुत्र भरतेश्वर स्वामी, पाए हैं इस जग में नामी॥20॥
पहले किस की खुशी मनाऐं, असमंजस था कहाँ पे जाएँ॥21॥
पहले समवशरण में आए, केवलज्ञान की खुशी मनाए॥22॥
धर्मेश्वर ने धर्म निभाया, धर्मश्रेष्ठ है ऐसा गाया॥23॥

ऋषभाचल पर अतिशयकारी, रत्न स्वर्णमय मंगलकारी।।24।।
मंदिर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, भरतेश्वर जी जो बनवाए।।25।।
रत्नमयी जिनमें प्रतिमाएँ, जन-जन के मन को जो भाएँ।।26।।
भाव सहित जिनमें पधराए, भारी उत्सव वहाँ मनाए।।27।।
जिनबिम्बों का न्हवन कराया, जिन पूजा कर पुण्य कमाया।।28।।
अतिशय कई विधान रचाए, वहाँ किमिच्छित दान दिलाए।।29।।
महलों में कई लोग बुलाए, यज्ञोपवीत उन्हें दिलवाए।।30।।
ब्राह्मण वर्ण चलाने वाले, भरतेश्वर जी हुए निराले।।31।।
लाख चौरासी पूरब भाई, भरतेश्वर ने आयू पाई।।32।।
लाख सतत्तर पूरब जानो, कुमार काल जिनका पहिचानो।।33।।
ऊँचे धनुष पाँच सौ गाये, छह लख पूरब राज्य चलाए।।34।।
मन में फिर वैराग्य जगाए, केश लुंचकर दीक्षा पाए।।35।।
अन्तर्मुहूर्त का ध्यान लगाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।।36।।
एक लाख वर्षों तक स्वामी, रहे केवली अन्तर्यामी।।37।।
जग को सद संदेश सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए।।38।।
अपने सारे कर्म नशाए, अष्टापद से मुक्ती पाए।।39।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवीं को पाएँ।।40।।

दोहा- पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
बने श्री का नाथ, शिवपद का हानी बने।।
रोग-शोक हो दूर, सुख-शांती आनन्द हो।
सद्गुण से भरपूर, होकर के शिवपद लहे।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्यः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे उत्तरप्रदेशे प्रान्तान्तर्ग श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र वी.नि. 2545 मासोत्तम मासे शुभे मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीया मंगलवासरे श्री भरतेश्वर स्वामी मण्डल विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

श्री भरतेश्वर स्वामी की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल आरती कीजे...

भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
आदिनाथ के पुत्र कहाए, माता नन्दा के सुत गाए।
भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, वंश इक्ष्वाकू धन्य किया है।।2।।
चक्र रत्न तुमने प्रगटाया, प्रथम चक्रवर्ती पद पाया।।3।।
छह खण्डों का वैभव पाए, किन्तु जग के भोग ना भाए।।4।।
जल में कमल रहे ज्यों भाई, जवन में यह वृत्ती पाई।।5।।
राज त्याग कर संयम पाए, अन्तर्मुहूर्त में ज्ञान जगाए।।6।।
अष्टापद से कर्म नशाए, परम मोक्ष पदवी जो पाए।।7।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, कर्म नाशकर ज्ञान जगाएँ।।8।।
अष्ट मूल गुण हम प्रगटाएँ, अष्टापद से मुक्ती पाएँ।।9।।
भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।

श्री आदिनाथ भरत बाहुबली जी की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है....

बाहुबली दरबार है, अतिशय बड़ा विशाल हैं।
भक्त यहाँ पर भक्ती करके, होते मालामाल हैं।।टेक।।
तीर्थंकर के पुत्र कहाए, कामदेव पद पाया जी-2।
चक्रवर्ती से भूप भरत को, रण में शीघ्र हराया जी-2।। बाहुबली..।।1।।
जागा जब वैराग्य हृदय में, वन को आप सिधाए जी-2।
एक वर्ष तक खड़े रहे प्रभु, अतिशय ध्यान लगाया जी-2।। बाहुबली...।।2।।
प्रभु के तन पर जीव जन्तुओं, ने स्थान बनाया जी-2
हाथ पैर में बेले लिपट, निज में निज को पाया जी-2।। बाहुबली...।।3।।
तीर्थंकर से पहले ही प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए-2।
भव सागर से पार हुए तुम, शिवपुर नगरी वास किए-2।। बाहुबली...।।4।।
आरति करके प्रभु चरणों में, 'विशद' भावना भाते जी-2।
ज्ञान ध्यान हो लक्ष्य हमारा, सादर शीश झुकाते जी-2।। बाहुबली...।।5।।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर